समाचार वाणी
ख़बर जो करें असर !

नाशिक | Wednesday, 26 August 2026

गरीबी से संघर्ष तक, संघर्ष से सफलता तक : पारनेर की सूखी धरती पर मेहनत से खड़ी की अपनी पहचान

Sanket Morankar

Published on 26 Aug 2026

कुछ सफर केवल व्यवसाय खड़ा करने के नहीं होते, बल्कि वे संघर्ष, सपनों, परिवार के त्याग, विश्वास और लगातार प्रयासों की कहानी होते हैं। यह कहानी भी ऐसे ही एक सफर की है, जिसमें गरीबी में बीता बचपन, कम उम्र में पिता को खोने का दर्द, नौकरी के लिए गांव से दूर जाने की मजबूरी और फिर अपनी मिट्टी में लौटकर कुछ नया खड़ा करने का संकल्प शामिल है।

गरीबी में बीता बचपन, लेकिन सपने कभी छोटे नहीं हुए

जीवन का सफर सुख-सुविधाओं से शुरू नहीं हुआ। बचपन और शिक्षा का दौर आर्थिक कठिनाइयों के बीच बीता। परिस्थितियां चुनौतीपूर्ण थीं, लेकिन पढ़ने और जीवन में कुछ हासिल करने की इच्छा हमेशा मन में बनी रही।

हर दिन संघर्ष से भरा था, लेकिन आगे बढ़ने की जिद कभी कम नहीं हुई। मुश्किलों ने रास्ता जरूर कठिन बनाया, लेकिन सपनों को खत्म नहीं किया।

बारहवीं में पिता का निधन, अचानक बढ़ गई जिम्मेदारियां

जीवन को एक नई दिशा मिलने ही वाली थी कि एक बड़ा दुख सामने आ गया। बारहवीं कक्षा में पढ़ाई के दौरान पिता का निधन हो गया।

पिता की छाया अचानक सिर से उठ गई। परिवार की जिम्मेदारी, भविष्य की चिंता और अपने जीवन का रास्ता—सब कुछ एक साथ सामने आ खड़ा हुआ।

यह समय बेहद कठिन था। मन को गहरा आघात लगा, लेकिन परिस्थितियों के सामने हार न मानने का निर्णय लिया गया। शिक्षा पूरी की और आगे रोजगार के लिए गांव से बाहर जाना पड़ा।

नौकरी के लिए गांव से दूर, लेकिन मन हमेशा अपनी मिट्टी में रहा

नौकरी के कारण गांव से दूर रहना पड़ा। रोजमर्रा का काम, जिम्मेदारियां और शहर की भागदौड़ जीवन का हिस्सा बन गई। लेकिन मन के एक कोने में गांव हमेशा बसा रहा।

गांव की मिट्टी, वहां के लोग, किसान, पशु और दूध व्यवसाय से जुड़ा रिश्ता कभी खत्म नहीं हुआ।

दूसरे शहर में नौकरी करते हुए भी एक विचार बार-बार मन में आता रहा—

"अपने गांव मे हीं कुछ खड़ा करना है और अपनी मिट्टी मे हीं अपना भविष्य बनाना है।"

नौकरी छोड़कर व्यवसाय में उतरने का लिया फैसला

नौकरी छोड़कर व्यवसाय शुरू करना आसान निर्णय नहीं था। एक निश्चित आय को छोड़कर फिर से अनिश्चितता का सामना करना था। लेकिन विश्वास था कि जीवन में बड़े बदलाव साहस से ही आते हैं।

अपने अनुभव, मेहनत और गांव से जुड़े रिश्ते को आधार बनाकर दुग्ध व्यवसाय में उतरने का निर्णय लिया गया।

पारनेर जैसे दुष्कर क्षेत्र में दुग्ध व्यवसाय खड़ा करना अपने आप में एक बड़ी चुनौती थी।

पारनेर की कठिन परिस्थितियों में शुरू हुआ दुग्ध व्यवसाय

पानी की कमी, सीमित संसाधन, बाजार में प्रतिस्पर्धा, उत्पाद की गुणवत्ता बनाए रखने की चुनौती और आर्थिक कठिनाइयां—कई समस्याएं एक साथ सामने थीं।

लेकिन परिस्थितियों को दोष देने के बजाय उनका समाधान खोजने का रास्ता चुना गया।

अथक प्रयास, निरंतरता, बेहतर योजना और ईमानदार मेहनत को व्यवसाय की नींव बनाया गया।

दूध और दुग्ध उत्पादों के क्षेत्र में शुरुआत करते समय कई चीजें खुद सीखनी पड़ीं। उत्पादन प्रक्रिया, गुणवत्ता, स्वच्छता, ग्राहक की अपेक्षाएं, पैकेजिंग, बाजार और व्यवसाय से जुड़ी छोटी-बड़ी सभी बातों का लगातार अध्ययन किया गया।

कुछ प्रयोग सफल रहे तो कुछ उम्मीद के मुताबिक नहीं रहे। कई बार नुकसान भी उठाना पड़ा, लेकिन हर कठिनाई ने एक नया अनुभव और नया सबक दिया।

"असफलता अंत नहीं होती ; वह अगली सफलता की तैयारी होती है।"

इसी सोच के साथ सफर आगे बढ़ता रहा।

दूध से लेकर अनेक दुग्ध उत्पादों तक बढ़ा कारोबार

समय के साथ दूध से **दही, छाछ, लस्सी, श्रीखंड, आम्रखंड, पनीर, लो-फैट पनीर, खवा, घी और विभिन्न मिठाइयों** जैसे अनेक उत्पाद तैयार करने का काम शुरू किया गया।

हर उत्पाद के पीछे एक ही उद्देश्य रहा—

ग्राहकों को बेहतर गुणवत्ता, बेहतर स्वाद और भरोसा देना।

व्यवसाय के लिए केवल उत्पाद बेचना ही लक्ष्य नहीं था। प्रत्येक ग्राहक को इस सफर का हिस्सा माना गया। ग्राहक एक बार उत्पाद खरीदने के बाद दोबारा उसी भरोसे के साथ वापस आए—इसे ही सबसे बड़ी कमाई माना गया।

गुणवत्ता से कभी समझौता नहीं करने का संकल्प

व्यवसाय में गुणवत्ता को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई। स्वच्छता, सही उत्पादन प्रक्रिया, गुणवत्ता नियंत्रण और लगातार सुधार पर विशेष ध्यान दिया गया।

यह सोच केवल व्यवसाय बढ़ाने की नहीं, बल्कि ग्राहकों के साथ लंबे समय का विश्वास बनाने की रही।

परिवार और सहयोगियों का योगदान रहा अमूल्य

इस पूरे सफर में परिवार की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण रही। संघर्ष के समय परिवार ने साथ दिया, निर्णयों पर विश्वास जताया और कठिन परिस्थितियों में मजबूती से पीछे खड़ा रहा।

इसके साथ ही सहयोगियों, मित्रों, किसानों, दूध उत्पादकों और ग्राहकों का योगदान भी इस यात्रा के लिए अमूल्य रहा।

आज पीछे मुड़कर देखने पर यह महसूस होता है कि गरीबी में शुरू हुआ बचपन, बारहवीं कक्षा में पिता को खोना, नौकरी के लिए गांव से दूर जाना और फिर भी गांव से जुड़े रहना—इन सभी अनुभवों ने जीवन को मजबूत बनाया।

दुष्कर भूमि पर खड़ा किया सपनों का व्यवसाय

जिस पारनेर क्षेत्र में चुनौतियों की कोई कमी नहीं है, उसी मिट्टी में कुछ नया खड़ा करने का प्रयास करना गर्व की बात है।

यह केवल व्यवसाय की सफलता नहीं है।

यह संघर्ष की पहचान है।

यह परिवार के त्याग की पावती है।

यह गांव से जुड़े रिश्ते की ताकत है।

और उन सभी लोगों के विश्वास का परिणाम है, जिन्होंने इस सफर मे संाथ दिया।

पिता की याद आज भी सफर का हिस्सा है

पिता आज इस सफर के इस पड़ाव को देखने के लिए साथ नहीं हैं, इसका दुख हमेशा रहेगा। लेकिन उनके संस्कार और उनकी दी हुई सीख आज भी हर कठिन परिस्थिति में आगे बढ़ने की ताकत देती है।

पिता की याद इस पूरी यात्रा में एक प्रेरणा बनकर साथ चलती रही है।

अब लक्ष्य सिर्फ व्यवसाय बढ़ाना नहीं

आज लक्ष्य केवल अपने व्यवसाय को बढ़ाना नहीं है। सपना है कि पारनेर की मिट्टी से एक **विश्वसनीय, गुणवत्तापूर्ण और आधुनिक दुग्ध व्यवसाय** खड़ा किया जाए।

स्थानीय किसानों और दूध उत्पादकों को बेहतर बाजार मिले, स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार के अवसर पैदा हों और इस क्षेत्र के उत्पादों को बड़े स्तर पर पहचान मिले—यही भविष्य का सपना है।

संघर्ष से मिली सीख

विश्वास है कि सफलता हासिल करने के लिए परिस्थितियों का परिपूर्ण होना जरूरी नहीं है। जरूरत होती है **जिद, निरंतरता और ईमानदार प्रयासों** की।

जीवन ने एक महत्वपूर्ण सीख दी है—

“शुरुआत कितनी छोटी परिस्थिति से हुई, यह उतना महत्वपूर्ण नहीं है ; महत्वपूर्ण यह है कि हमने उस परिस्थिति से कितना बड़ा निर्माण किया।”

गरीबी में शिक्षा हासिल की, कम उम्र में पिता को खोया, नौकरी के लिए गांव से दूर जाना पड़ा, लेकिन गांव से जुड़ी नाल कभी टूटने नहीं दी। उसी रिश्ते को ताकत बनाकर पारनेर की कठिन परिस्थितियों वाली मिट्टी में लगातार मेहनत से अपने सपनों का व्यवसाय खड़ा करने का प्रयास किया।

यह केवल एक व्यवसाय की कहानी नहीं, बल्कि संघर्ष से सपनों तक पहुंचने की प्रेरणादायक यात्रा है।

गरीबी से शुरुआत, पिता को खोने का दर्द, नौकरी के लिए गांव से दूर जाना और फिर अपनी मिट्टी में लौटकर दुग्ध व्यवसाय खड़ा करना—इस सफर ने साबित किया कि परिस्थितियां चाहे कितनी भी कठिन क्यों न हों, जिद और मेहनत के सामने रास्ते जरूर

बनते हैं।

लेकिन यह सफर अभी समाप्त नहीं हुआ है।

यह एक नए अध्याय की शुरुआत है।

अब सपना और बड़ा है—अपनी मिट्टी से रिश्ता बनाए रखते हुए, अपने लोगों को साथ लेकर और गुणवत्ता की ताकत पर एक बड़ी पहचान बनाना।

क्योंकि संघर्ष से हासिल हुई सफलता केवल अपनी नहीं होती; वह आने वाली पीढ़ी को सपने देखने और उन्हें पूरा करने की प्रेरणा देती है।

और यह सफर आज भी जारी है—नए सपनों के साथ, नए लक्ष्यों के साथ और उसी पुरानी जिद के साथ... अथक प्रयासों के बल पर।

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Sanket Morankar, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsover.